# मराठी व्याकरण

# संधी

- संधी तत्सम शब्दाच्या बाबतीत होते.
- वर्णाच्या एकत्र होण्याच्या प्रकारास संधी असे म्हणतात.

वर्ण + वर्ण = संधी

संधी म्हणजे वर्णाचे एकत्रीकरण होय.

- एकापुढे एक आलेले दोन वर्ण एकत्र होण्याच्या प्रकारास संधी म्हणतात

- संधी शब्द ओळखा ६ उत्तर – तत्सम शब्द
- संधी वचन ओळखा ६ उत्तर – एकवचन व अनेकवचन
- संधी लींग ओळखा ६ उत्तर – पुल्लींगी व स्त्रीलिंगी
- संधी साधणे म्हणजे काय ६ उत्तर – जोडणे होय
- संधीचे प्रकार किती ६ उत्तर – चार

# संधीचे प्रकार

1) स्वर-संधी

२) व्यंजन संधी

३) विसर्ग संधी

४) मराठी -विशेष संधी

# स्वरसंधी

स्वरसंधी :-

जेव्हा दोन स्वर एकत्र ऐतात तेव्हा या संधीला स्वर संधी असे म्हणतात.

स्वर +स्वर = स्वरसंधी

स्वर संधीचे एकुण चार प्रकार पडतात

१) दीर्घत्व स्वर संधी

२) गुणादेश स्वर संधी

३) वृद्ध्यादेश स्वरसंधी

४) यणादेश स्वरसंधी

# दीर्घत्व स्वरसंधी

- दोन सजातिय स्वर एकापुढे एक आले असता त्या दोघाबद्दल दीर्घ स्वर होतो त्यास दीर्घत्व स्वरसंधी असे म्हणतात.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १)ऱ्हस्व +ऱ्हस्व = दीर्घ | अ + अ = आ | इ + इ = ई | उ + उ = ऊ |
| २)ऱ्हस्व + दीर्घ = दीर्घ | अ + आ = आ | इ + ई = ई | उ + ऊ = ऊ |
| ३) दीर्घ +ऱ्हस्व = दीर्घ | आ + अ = आ | ई + इ = ई | ऊ + उ = ऊ |
| ४) दीर्घ + दीर्घ = दीर्घ | आ + आ = आ | ई + ई = ई | ऊ + ऊ = ऊ |

# nh?AZRo Lojla/Ah

विद्यार्थी = विद्या+अर्थी

सुर्यास्त = सूर्य+अस्त

महिश = मही+ईश

मुनिच्छा = मुनि+इच्छा

मातृण = मातृ+ ऋण

जोडाक्षर = जोड+अक्षर

कुंभार = कुंभ+आर

भानुदय = भानु +उदय

# विग्रह

- सूर्यास्त

सूर्यास्त = सूर्य + अस्त

| | |
|---|---|
| स + ऊ= सू | सू + र्य+ अ + स्त |
| य + र = र्य | सू + य + र + अ + स्त |
| र्य +आ = र्या | सू + य + र् + अ + अ +स्त |
| र +अ = र | सू + र्य + आ + स्त |
| स् +त =स्त | सूर्यास्त |

# विग्रह

- विद्यार्थी

विद्यार्थी= विद्या + अर्थी

| | |
|---|---|
| व + इ =वि | वि + द्या + अ + र्थी |
| द + य =द्य | वि + द् + य + आ + अ +र्थी |
| द्य + आ=द्या | वि + द्य + आ + र्थी |
| थ + ई =थी | वि + द्या + र्थी |
| थी+ र =र्थी | विद्यार्थी |

# गुणादेश स्वर संधी

- अ – आ यांच्यापुढे इ – ई आल्यास त्यांचा ”ए” होतो.
- अ – आ यांच्यापुढे उ – ऊ आल्यास ”ओ” होतो
- अ – आ यांच्यापुढे ”ऋ” आल्यास त्याचा ”अर” होतो.

वरील सर्व बदलास संस्कृत मध्ये गुण असे म्हणतात व जो बदल होऊण दुसरा वर्ण येतो त्यास गुणादेश संधी म्हणतात.

# गुणादेश स्वर संधी

- ईश्वरेच्छा

श + व = श्व

र + ए = रे

च + छ = च्छ

च्छ+ आ =च्छा

र + अ = र

ईश्वरेच्छा = ईश्वर + इच्छा

ई + श्व + र + अ + इ + च्छा

ई + श्व + र + ए + च्छा

ई + श्व + रे + च्छा

ईश्वरेच्छा

# गुणादेश स्वर संधी

- चंद्रोदय

| | |
|---|---|
| च + ़ = चं | चंद्रोदय = चंद्र + उदय |
| द + र = द्र | चं+द+र+उ+द+य |
| द्र +ओ = द्रो | चं+द+र्+अ+उ+द+य |
| र +अ = र | चं+द्र+ओ+द+य |
| | चंद्रोदय |

# गुणादेश स्वर संधी

- देवर्षि

देवर्षि = देव + ऋषि

| | |
|---|---|
| द+ए=दे | दे + व + अ + ऋ + षि |
| व+अ=व | दे + व + अर +षि |
| ष+ इ=षि | दे + व + र्षि |
| षि+र= र्षि | देवर्षि |

# xq.AAns'A Loj la/Ah

- गणे'A ^x.A ~ bZ'A
- उमेश = उमा + ईश
- महोत्सव = महा + उत्सव
- महर्षि = महा + ऋषि

# वृद्ध्यादेश स्वरसंधी

- अ – आ यांच्यापुढे ए – ऐ आल्यास त्याचा "ऐ" होतो.
- अ – आ यांच्यापुढे ओ – औ आल्यास त्याचा औ होतो.
- यालाच आदेश असे म्हणतात व त्यापासुन तयार होणाऱ्या संधी व वृद्ध्यादेश स्वरसंधी असो म्हणतात.
- एकैक मतैक्य प्रजैक्य सदैव
- जलौघ गंगौघ वृक्षौदार्य भावौषधी

# वृद्ध्यादेश स्वरसंधी

- एकैक

क + ए = के

के + ए = कै

एकैक = एक + एक

ए + क + ए + क

ए + क + अ + ए + क

ए + क + ऐ + क

ए + कै + क

एकैक

# यणादेश स्वरसंधी

- इ - उ - ऋ - ऌ यांच्यापुढे विजातिय स्वर आल्यास

१) इ - ई साठी ”य”

२) उ - ऊ साठी ”व”

३) ऋ साठी ”र”

४) ऌ साठी ”ल”

- इत्यादी, प्रीत्यर्थ
- स्वल्प, अत्युत्तम
- प्रत्येक ,मन्वंतर, पित्राज्ञा

- इत्यादी= इति + आदी
- त+य =त्य
- त्य+आ=त्या
- द+ई=दी
- त+इ=ति

इ+ति+आ+दी

इ+त+इ+आ+दी

इ+त+य+आ+दी

इ+त्य+आ+दी

इत्यादी

स्वल्प= सु+अल्प

स+व =स्व

ल+प=ल्प

स+उ=सु

व+अ=व

स + उ+ अ + ल+ प

स + व +अ + ल्प

स्वल्प

उदा. सोयी,नव,गाई

- ए,ऐ,ओ,औ या स्वरापुढे स्वर आला तर त्याबद्दल (अय् ,आय्,अव्,आय्)असे आदेश होऊन पुढील स्वर यात मिसळतो.

- ए + अ = अय् + अ = अय    ने + यन= नयन
- ऐ + अ = आय् +अ = आय    गै + अन = गायन
- ओ + ई = अव् + ई = अवी    गो + ईश्वर= गवीश्वर
- औ + इ = आव् + इ =आवि    नौ + इक =नाविक

नयन

ने + अन

न + ए + अ + न

न + अय + अ + न

न + य + न

नयन

गायन

गै + अन

ग + ऐ + अ + न

ग + आय + अ + न

ग + य + न

गायन

# व्यंजनसंधी

SUBSCRIBE NOW

# मराठी व्याकरण

Blogger

(MARATHI TUITAR)

**स्पर्श व्यंजन**

| | | कठोर वर्ण | | मृदु वर्ण | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कंठ वर्ण | → | क् | ख् | ग् | घ् | ङ् |
| तालव्य वर्ण | → | च् | छ् | ज् | झ् | ञ् |
| मृधन्य वर्ण | → | ट् | ठ् | ड् | ढ् | ण् |
| दंत वर्ण | → | त् | थ् | द् | ध् | न् |
| ओष्ठ वर्ण | → | प् | फ् | ब् | भ् | म् |

अनुनासिक वर्ण

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अंतस्त वर्ण | → | य् | व् | र् | ल् |
| उष्मे वर्ण | → | श् | ष् | स् | |
| महाप्राण वर्ण | → | ह् | | | |
| स्वतंत्र वर्ण | → | ळ् | | | |

# व्यंजनसंधी

व्यंजनसंधीचे खालिल प्रकार पडतात

- प्रथम व्यंजनसंधी
- तृतीय व्यंजनसंधी
- अनुनासिक व्यंजनसंधी

# प्रथम व्यंजनसंधी

- स्पर्श व्यंजनापैकी अनुनासिकाशिवाय कोणत्याही व्यंजनापुढे कठोर व्यंजन आले असता, त्या पहिल्या व्यंजना जागी त्याच्याच वर्गातिल पहिले कठोर व्यंजन येऊन संधी होते. याला प्रथम व्यंजनसंधी

- विपत्काल = **विपद + काल** २)वात्कति = **वाग + पति**

३) वाक्ताडन= **वाग् + ताडन**

- षट्शास्त्र = **षड् + शास्त्र** २)क्षुत्पिपासा = **क्षुध् + पिपासा** ३)

आपत्काल = **आपद् + काल**

- शरत्काल = **शरद् + काल** २) क्षुत्पीडा = क्षुद् + पीडा

# प्रथम व्यंजनसंधी

- विपत्काल

व + इ = वि

प् + अ = प

त् + का = त्का

ल् + अ = ल

विपत्काल = विपद् + काल

व + इ + प् + अ + द् + क् + आ +ल

वि + प + त् + क् + आ + ल

वि + प + त्क् + आ + ल

वि + प + त्का + ल = विपत्काल

# प्रथम व्यंजनसंधी

- वाक्पति

व + आ = वा

क् + प = क्प

त + इ = ति

क ख ग घ

वाक्पति = वाग् + पति

वा + ग् + प् + अ + त + इ

वा + क् + प्+ अ + त + इ

वा + क्प् + अ + त + इ

वा + क्प + त + इ = वाक्पति

# तृतीय व्यंजनसंधी

**पहील्या पाच वर्गातिल अनुनासिकखेरीज कोणत्याही कठोर व्यंजनापुढे स्वर किंवा मृदू व्यंजन आले असता, पहील्या वर्णा बद्द्ल/ व्यंजनाबद्द्ल त्याच्याच वर्गातिल तिसरे व्यंजन येऊन संधी होते. त्यास तृतीय व्यंजनसंधी म्हणतात**

अब्ज = अप् + ज्

सदाचार=सत् +आचार

सदानंद=सत् +आनंद

चिदानंद=चित् +आनंद

दिग्विजय=दिक् + विजय

षड्रिपू =षट् + रिपू

# तृतीय व्यंजनसंधी

- अब्ज

ब् + ज = ब्ज

प(१) फ ब(३) भ

अब्ज = अप् + ज्

अ + प् + ज

अ + ब् + ज

अ + ब्ज

अब्ज

# तृतीय व्यंजनसंधी

- सदाचार

द + आ = दा

च + आ = चा

सदाचार = सत् + आचार

स + त् + आ + चा + र

स + द + आ + चा + र

स + दा + चा +र

सदाचार

त + थ + द + ध

वाग्विहार=वाक् + विहार

षडानन=षट् + आनन

सद्भावना=सत् + भावना

भगवतगिता=भगवत् + गीता

दिगंबर=दिक् + अंबर

# अनुनासिक संधी

- कोणत्याही व्यंजनपुढे अनुनासिक व्यंजन आल्यास पहील्या व्यंजनाबदद्ल त्याच वर्गातिल अनुनासिक व्यंजन येऊन संधी होते त्यास अनुनासिक संधी असे म्हणतात.

सन्मती=सत् + मती

षण्मास= षट् + मास

जगन्नाथ= जगत् + नाथ

वाङ्.मय=वाक् + मय

वाङ्:निश्चय=वाक् + निश्चय

# अनुनासिक संधी

सन्मती

न् + म = न्म

त + ई = ती

त थ द ध न

सन्मती = सत् + मती

स + त् + म + त + ई

स + न् + म + त + ई

स + न्म + ती = सन्मती

# अनुनासिक संधी

- षण्मास

ण् + म् = ण्म्

ण्म् + आ = ण्म

ट ठ ड ढ ण

षण्मास = षट् + मास

ष + ट् + म् + आ + स

ष + ण्+ म् + आ + स

षण्मास

तन्मय=तत्  +  मय

तन्मन=तत्  +  मन

सन्मार्ग=सत्  +  मार्ग

षण्मुख=षट्  +  मुख

- “त” या व्यंजनापुढे च छ आल्यास त बदद्ल च होतो
- “त” या व्यंजनापुढे ज झ आल्यास त बदद्ल ज होतो
- “त”या व्यंजनापुढे ट ठ आल्यास त बदद्ल ट होतो.
- “त”या व्यंजनापुढे ल आल्यास ल बदद्ल ट होतो.
- “त” च्या पुढे स्वर आल्यास तो स्वर मागील म मध्ये मिसळून जातो
- “त” च्या पुढे व्यंजन आल्यास म बदद्ल मागिल अक्षरावर अनुस्वार येतो व म चा लोप होतो.

- सच्चरित्र= सत् + चरित्र
- सज्जन=सत् + जन
- तट्टीका=तत् + टीका
- उल्लंघन=उत् + लंघन
- सच्छिल=सत् + शिल
- सच्छिष्य=सत् + शिष्य
- समाचार=सम् + आचार
- संगती= सम् + गती
- उज्ज्वल= उत् + ज्वल
- तल्लीन=तत् + लिन

- छ पुर्वी ऱ्हस्व स्वर आला असता त्या दोघामध्ये च होतो.
- रत्नछाया , शब्दच्छल ( अ + इ + उ + ऋ + ऌ )

- रत्नछाया

रत्नछाया =रत्न + च्छाया

र + त् + न + अ + छ + आ + या

र + त् + न + च् + छ + आ + या

र + त् + न + च्छ + आ + या

रत्नछाया

- **समास होतांना प्रथम शब्द नकारात असल्यास न चा लोप होतो**
- राजाज्ञा = राजान + आज्ञा
- प्राणिमात्रा रा + जा + न + आ + ज्ञा (न चा लोप)
- राजगृह रा + जा + आ + ज्ञा
- हस्तीदंत राजाज्ञा

प्राणिन + मात्रा राजनगृह हस्तीन + दंत

SUBSCRIBE NOW

# मराठी व्याकरण

Blogger

(MARATHI TUITAR)

# विसर्गसंधी

SUBSCRIBE NOW

# मराठी
# व्याकरण

Blogger

**(MARATHI TUITAR)**

# विसर्गसंधी

- एकत्र ऐणाऱ्या वर्णातील पहीला वर्ण विसर्ग व दुसरा वर्ण व्यंजन किंवा स्वर असतो त्यास विसर्गसंधी असे म्हणतात.

विसर्ग + व्यंजन = विसर्गसंधी

विसर्ग + स्वर = विसर्गसंधी

# विसर्ग-उ-कार संधी

विसर्गाच्या मागे अ हा स्वर असून पुढे व्यंजन आल्यास विसर्गाचा उ होतो व तो मागील स्वरामध्ये मिसळून त्याचा ओ होतो.

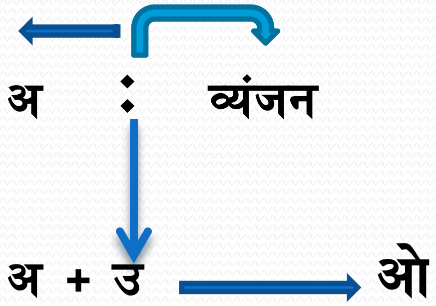

मनोरथ= मन : + रथ

यशोधन= यश : + धन

मनोगत= मन : + गत

मनोरंजन= मन : + रंजन

अधोवदन= अध : + वदन

तेजोनिधी= तेज : + निधी

अधोमुख= अध : + मुख

रजोगुण= रज : + गुण

# विग्रह

- मनोरथ

न + ओ = नो

न + अ = न

मनोरथ = मन : + रथ

म + न + : + र + थ

म + न् + अ + : + र + थ

म + न् + अ + उ +र + थ

म + न् + ओ + र + थ

मनोरथ

# विसर्ग □र” संधी

- विसर्गाच्या मागे अ,आ खेरीज कोणताही स्वर आल्यास किंवा पुढे मृदू वर्ण आल्यास विसर्गाचा □र” होऊण संधी होते त्यास विसर्ग र संधी असे म्हणतात.

अ आ : मृदू वर्ण ( ३ + ४ + ५ + १२ स्वर + अर्धस्वर)

र

दुर्जन=दु:जन

निरंतर=निः + अंतर

बहिरंग=बहिः + रंग

दुरात्मा=दुः + आत्मा

निर्विकार=निः + विकार

निर्लोभ=निः लोभ

निरिच्छा=निः +इच्छा

दुर्दैव=दुः + दैव

दुर्वासन=दुः +वासन

दुर्जन

द + उ = दु

र + ज = र्ज

दुर्जन = दुः + जन

द + उ + ः + ज + न

द + उ + र + ज + न

दु + र्ज + न

दुर्जन

- र या व्यंजनापुढे र आल्यास पहील्या र चा लोप होतो व मागील स्वर ऱ्हस्व असल्यास दीर्घ होतो. (नीरस ,नीरव नीरज)

नीरस

निः + रस

न + इ + : + र + स

न + इ + र + र + स

न + ई + र + स

नी + र + स = नीरस

- पदाच्या शेवटी र येवुन त्याच्यापुढे कठोर व्यंजन आल्यास त्या र चा विसर्ग होतो

**अंतकरण चतुरसुत्री**

अंत : करण

अंतर + करण

अं + त + र + क + र +ण

⬇

अंत : करण

- विसर्गाच्या ऐवजी येणाऱ्या र च्या मागे अ हा स्वर असून पुढे मृदू व्यंजन आल्यास तो र तसाच राहून संधी होते. **पुर्नजन्म,अंतरात्मा**

**पुनर्जन्म = पुनर् +जन्म**

**पु +न + र् + ज + न्म**

**पु +न् + अ + र +ज +न्म**

**पु +न + र + ज + न्म**

**पु + न + र्ज +न्म**

**पुनर्जन्म**

- विसर्ग मागे अ हा स्वर असून पुढे क ख प फ ही व्यंजने आली तर विसर्ग कायम राहतो व पुढे अन्य स्वर आल्यास विसर्गाचा लोप होतो. प्रात:काल तेज:पुज इतउत्तर अतएव

इतउत्तर

इत: + उत्तर

इ + त + : + उ + त्त + र

← →

इ + त् + अ + : + उ + त्त + र

इ + त् + अ + उ + त्त + र

इ + त + उ + त्त + र=इतउत्तर

- विसर्ग मागे अ हा स्वर असून पुढे क ख प फ ही व्यंजने आली तर विसर्ग कायम राहतो व पुढे अन्य स्वर आल्यास विसर्गचा लोप होतो. प्रात:काल तेज:पुज इतउत्तर अतएव

प्रात:काल

प्रा + त + : + का + ल

प्रा + त + अ + : + क + आ + ल

प्रा + त + : + का + ल

प्रात:काल

• विसर्गाच्या मागे इ – उ हे स्वर असून पुढे क ख प फ ही कठोर व्यंजने आली तर विसर्गाचा ष होतो.

इ / उ : क – ख – प – फ

ष

निष्पाप = निः +पाप

नि + : + प + आ + प

न + इ + : + प + आ + प

न + इ + ष् + प + आ + प

नि + ष्पा +प = निष्पाप

दुष्काळ = दु : + काळ

दुष्परीणाम= दु : + परीणाम

दुष्कृत्य=दुः कृत्य

दुष्कीर्ती=दु:+कीर्ती

चतुष्कोन=चतु:+कोन

आयुष्क्रम= आयु : + क्रम

बहीष्कृत=बहीः + कृत

अपवाद= निष्फळ=निः फळ निष्कारण=नि:कारण

निष्कर्ण=नि:कर्ण

- विसर्गाच्या पुढे च व छ आल्यास विसर्गाचा श होतो.

विसर्गाच्या पुढे त व थ आल्यास विसर्गाचा स होतो.

: च – छ

श

: त – थ

ष

मनस्ताप

निश्चल

मन : + ताप

नि + : + च + ल

म + न + : + त + आ + प

नि + श् + च + ल

म + न + स् + त + आ + प

नि + श्च + ल

म + न + स्त + आ + प

निश्चल

म + न + स्ता + प

मनस्ताप

# मराठी विशेष संधी

मराठीतुन तत्सम श्ब्द संस्कृत भाषेतुन बरेच आले आहेत ते एकत्र आले कि त्याची संधी होते म्हणून मराठी संधीचे दोन प्रकार पडतात

१) पुर्वरुप संधी

२) पररुप संधी

पुर्वरुप संधी= जेव्हा स्वर ऐकापुढे एक आले असता त्यातील पहीला स्वर न बदलता तसाच राहतो व दुसरा स्वर लोप पावतो त्या संधीय पुर्वरुप संधी म्हणतात

- **1 2**

**पुर्वरुप + उत्तरपद = पुर्वरुप संधी**

**गौणपद**

**पररुप पद**

**नदीत**

**नदी + आत**

**न + द + ई + अ + त**

**नदीत**

काहीसा = काही + असा

करतोहे = करतो + आहे

कितीक = किती + एक

गेलाहे = गेला + आहे

लाडूत = लाडू + आत

दिलेसे = दिले + असे

**परररुप संधी**= मराठी शब्दांची संधी होत असतांना पहील्या पदावरील शेवटचा स्वर **लोप पावतो** व दुसरा स्वर **कायम राहतो** त्या संधीस पररुप संधी म्हणतात

घरी = घर + ई

घ + र् + अ + ई

घ + र + ई = घरी

एकेक = एक + एक

ए + क + ए + क

ए + क् + अ + ए + क = एकेक

पायी = पाय + ई = अ + ई

सांगेन = सांग + एन= अ + ए

घामोळे = घाम + मोळे= अ + ओ

दारी = दार + ई = अ + ई

शेजारी = अ + ई

SUBSCRIBE NOW

# मराठी व्याकरण

Blogger

(MARATHI TUITAR)